सितम्बर २०१४

कीमत १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

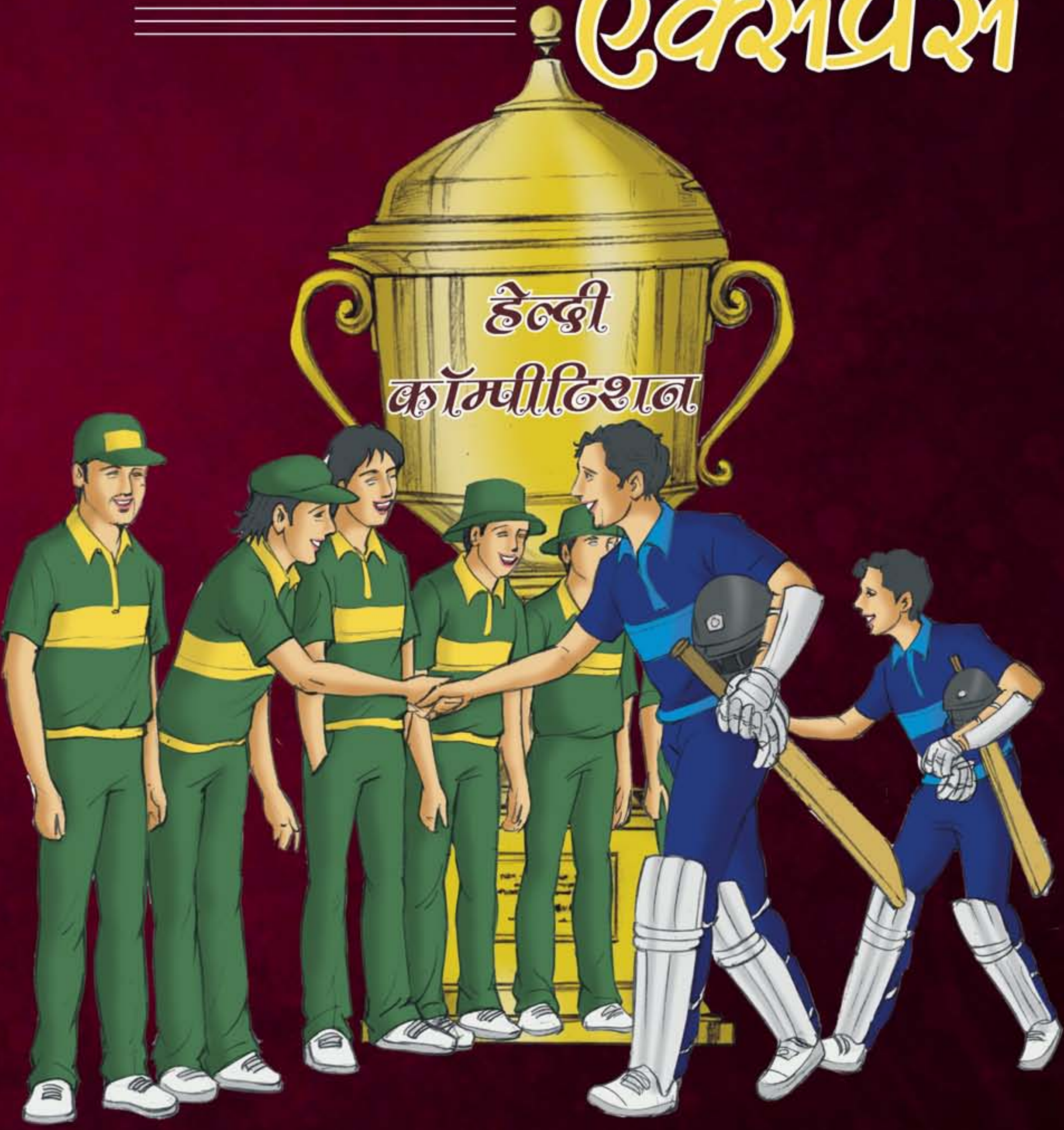

अनुक्रमणिका

अक्रम एक्सप्रेस

ज्ञानी कहते हैं...३
यह तो नई ही बात!...८
स्टेडियम में... समझा एक नया ही अर्थ...४
एक अनोखी रेस...१०
जन्माष्टमी के फोटो...२०
अपने आपको परखकर देखो...१३
मीठी यादें...१९
सत्य घटना...१५
ऐतिहासिक गौरवगाथा...१६

संपादकीय

बालमित्रों,

सभी के बीच हमारा बोलबाला हो यह किसे अच्छा नहीं लगता? लेकिन जब, "बस मेरा ही बोलबाला हो, किसी और का नहीं" जब मन में ऐसी संकुचितता आ जाए तो उसमें ईर्ष्या का विष घुल जाता है। और कोई हमसे आगे बढ़ जाए, यह भी हम देख नहीं सकते। फिर अनजाने में ही उसे नीचे गिराने के प्रयत्न करने में लग जाते हैं।

स्पर्धा तो "हेल्दी" होनी चाहिए। जिसमें "तुम भी आगे बढ़ो और मैं भी आगे बढ़ूँ" ऐसा रहना चाहिए। सामनेवाला आगे बढ़े उसमें मैं खुश ही हूँ, लेकिन ऐसी नोबिलिटी लाएँ कहाँ से?

इस अंक में परम पूज्य दादाश्री ने इस पर बहुत अच्छा समझाया है। तो आओ, इस अंक को पढ़कर ईर्ष्या के ज़हर को निकाल फेंके और "हेल्दी कॉम्पीटिशन" के रास्ते पर चलें।

- डिम्पल महेता

हेल्दी कॉम्पीटिशन

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक : ६
अखंड क्रमांक : १८
सितम्बर २०१४

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत : १२५ रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : मुझे मुझसे आगे निकलनेवाले से ईर्ष्या हो जाती है और स्पर्धा भी होती है। मालूम है कि यह गलत है। मुझे इसे हेल्दी कॉम्पीटिशन में कैसे बदलना चाहिए?

दीपकभाई : हमें भाव नहीं बिगाड़ने चाहिए कि उसे कम मिले, वह गिर जाए, वह आगे नहीं बढ़ पाए, उसे ठीक से ना आए, मुझे ज्यादा अच्छा आए, मेरे मार्क्स ज्यादा आएँ, उसके कम आएँ। उसके लिए बुरा सोचने की ज़रूरत ही नहीं है। सभी का भला हो, सभी आगे बढ़ें और मैं भी अपनी तरह से डबल मेहनत करूँगा। फिर जो होगा वह सही। समझे न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दीपकभाई : यदि हमसे कोई आगे हैं, उससे भी आगे कोई होगा ही न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दीपकभाई : और हमसे पीछे भी कई होंगे न? फिर उनसे तो हम आगे ही हैं न? तो कॉम्पीटिशन क्यों करना चाहिए? हमें अपने तरीके से खुद की शक्ति के अनुसार आगे बढ़ना चाहिए। उसकी शक्ति के अनुसार, उसके संयोग के अनुसार उसे आगे बढ़ने दो। हेल्दी कॉम्पीटिशन किसे कहेंगे? कि तुम आगे बढ़ो।

एक बनी हुई लाइन हो तो उसे छोटा करने के लिए क्या करोगे? उसके पास ही बड़ी लाइन बनाओगे या फिर उसे काट दोगे। इसमें से कौन सा रास्ता सही है?

प्रश्नकर्ता : उसके पास बड़ी लाइन बनाएँगे।

दीपकभाई : हाँ, अपनी शक्ति बढ़ानी चाहिए। ज्यादा पढ़े या फिर जो भी काम चल रहा है, उसमें सिन्सियारिटी बढ़ाओ। सफलता मिले उसके सभी प्रयत्न करो। लेकिन सामनेवाले को नीचे गिराना, वह मत करना।

प्रश्नकर्ता : मैं अपने काम के प्रति सिन्सियर हूँ लेकिन यदि सामनेवाला आगे बढ़ जाए तो लगता है कि ऐसा कैसे हो गया?

दीपकभाई : नहीं, हमें भावना करनी है कि सब आगे बढ़ें। सब आगे बढ़ें, मैं भी अपने तरीके से आगे बढ़ूँगा। ट्राई करूँगा। यदि मेरे अच्छे मार्क्स आए तो मेरा पहला नंबर आएगा और यदि नहीं आए तो सेकन्ड, थर्ड आएगा, नहीं तो दसवाँ आएगा, पास तो हुआ। सभी मुझसे आगे बढ़ें, भावना तो करो। नहीं तो खराब भावना करने पर भी कई बार उसका नंबर आगे आ ही जाता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दीपकभाई : तब अपनी बुरी भावना बेकार नहीं जाती, उसका अहित नहीं कर रहे, एक दिन आपका ही अहित होगा। इसलिए हमें समझना चाहिए कि मुझसे कई लोग पीछे हैं ही न? उनसे तो आगे ही हूँ न! दुखी होने की क्या ज़रूरत है? बल्कि भावना करनी चाहिए मुझसे पीछे आनेवाले भी बहुत आगे जाएँ। पता है दादा क्या कहते थे, मुझसे भी सवाए ज्ञानी बनो ऐसा मेरा आशीर्वाद है। जाओ सब आगे बढ़ो। बताओ, कितना बड़ा दिल होगा।

स्टेडियम में... समझा एक नया ही अर्थ

भूमि! भूमि! भूमि!!

पूरा स्टेडियम भूमि के नाम से गूँज रहा था। अंतिम राउन्ड था। भूमि ने ज़ोरदार शॉट मारा और इन्टर स्कूल टेनिस चेम्पियनशिप की ट्रॉफी जीत ली।

"बहुत बहुत बधाई, बेटा। मुझे आशा है कि अगले महीने के हॉकी गेम में भी तुम अपनी कुशलता से अपने स्कूल का नाम रौशन करोगी।" प्रिन्सिपल ने भूमि को बधाई देते हुए कहा।

"ग्रेट जॉब भूमि," "भूमि तुम तो अपने स्कूल की स्टार हो।" पापा-मम्मी, टीचर्स और फ्रेन्ड्स सभी ने भूमि को बधाई दी।

घर आकर भूमि ने अपनी ट्रॉफी बाकी स्पोर्ट्स प्राइज़ के पास रख दी। दो मिनिट तक वह अपनी ट्रॉफी को ही देखती रही। भूमि को अब जीतने का चस्का लग गया था। मान खाने और तारीफ सुनने की उसे आदत पड़ गई थी। वह सबसे श्रेष्ठ है ऐसी मान्यता उसके मन में बैठ गई थी।

देखते-देखते हॉकी गेम का दिन आ गया। भूमि की स्कूल लिटल स्टार ने प्रतिपक्षी स्कूल को ५-३ से हरा दिया। भूमि के अलावा सभी खुश थे। भूमि के भीतर तूफान चल रहा था। इतने खुशी के मौके पर भी, भूमि के चेहरे पर खुशी की एक झलक भी नज़र नहीं आ रही थी। इसका कारण यह था कि आज लिटल स्टार स्कूल की स्टार, वह खुद नहीं लेकिन अश्मी थी। चारों तरफ अश्मी का बोलबाला था। अपनी टीम गेम जीत गई, उसकी उसे खुशी नहीं थी। लेकिन अश्मी उससे ज्यादा अच्छा खेली, इससे उसे भयंकर जलन हो रही थी।

"वेरी वेल, सुपर्ब" कहकर सभी विद्यार्थी और शिक्षक अश्मी को बधाई दे रहे थे। अश्मी की तारीफ सुनकर भूमि को बहुत ही अकुलाहट होने लगी। भूमि को अपनी तारीफ सुनने की इतनी आदत पड़ गई थी कि किसी और की तारीफ उससे सहन ही नहीं हो रही थी। "मेरी तबीयत ठीक नहीं है।" ऐसा बहाना बनाकर भूमि जल्दी से घर चली गई। ट्रॉफी लेने भी नहीं रुकी।

स्कूल में लंबे समय तक सभी अश्मी की कुशलता की तारीफ करते रहे। भूमि के मन में अश्मी के प्रति ईर्ष्या का अंकुर अब बड़ा पेड़ बन गया था। "किस तरह अश्मी को नीचा दिखाया जाए, किस तरह उसे पछाड़कर फिर से आगे आ जाऊँ। क्या करूँ ताकि सभी लोग उसकी तारीफ करना बंद कर दें और फिर से मेरी तारीफ करने लगें।" ऐसी उधेड़बुन उसके भीतर चलती रहती थी। क्लास में कोई टेस्ट हो, व्यायाम के पिरीयड में कोई खेल रहे हों या मस्ती के लिए अंताक्षरी खेल रहे

हों, भूमि का लक्ष्य हमेशा अश्मी को हराने और उसे नीचा दिखाने का ही रहता था। कभी भी क्लास में अश्मी की गलती हो या उसके कम मार्क्स आए तो भूमि को मज़ा आ जाता था। लेकिन, इस ईर्ष्या की आग में भूमि की सभी शक्तियाँ खत्म हो रही थीं। स्पोर्ट्स और पढ़ाई में उसका रिज़ल्ट बिगड़ता जा रहा था। भूमि की खास फ्रेन्ड ऋतु को उसका ऐसा बरताव पसंद नहीं था। अश्मी के प्रति भूमि की ईर्ष्या का उसे पता चल गया था। उसने कई बार भूमि को समझाने का प्रयत्न भी किया था।

"भूमि, खेल में हार-जीत दोनों ही होते रहते हैं। स्पोर्ट में स्पिरिट(जोश) तो तभी रहती है, जब हारने और जीतनेवाले दोनों को ही आनंद हो। तुम्हें पता है कि मेरे डैडी गोल्फ खेलते हैं?" ऋतु ने पूछा।

भूमि धीरे से बोली, "हाँ, पता है। वे गोल्फ चेम्पियन हैं न?"

"हाँ" ऋतु ने हंसकर कहा, "लेकिन गोल्फ चेम्पियन होने के साथ उनकी स्पोर्ट के प्रति नज़रिये में वे चेम्पियन हैं। वे हमेशा कहते हैं कि खेलते समय उनका लक्ष्य किसी को हराने का नहीं होता, लेकिन खुद अच्छे से अच्छा खेलें यह होता है। हेल्दी कॉम्पीटिशन उसी को कहते हैं कि खुद अच्छे से अच्छा करने का प्रयत्न करे और उसी में संतोष और आनंद रहे। कभी भी सामनेवाले की जीत से हताश न हो, बल्कि उससे सीखने का प्रयत्न करे।"

"ऋतु, तुम्हारी लेक्चर बाजी में मुझे कोई रुचि नहीं है।"अकड़कर भूमि ने कहा। ऋतु की बात का उस पर कोई असर नहीं हुआ बल्कि अश्मी के प्रति उसका द्वेष बढ़ता ही जा रहा था और हद तो तब हुई जब पहली बार टेनिस टूर्नामेन्ट में उसकी जगह अश्मी को सिलेक्ट किया गया।

"अश्मी की तबीयत बिगड़ जाए तो कितना अच्छा, इस बार वह हारनी चाहिए..." इस तरह सोचते हुए वह रास्ते पर चल रही थी। इतने में पीछे से ऋतु ने उसे सिर पर चपत लगाई।

"बता मेरे हाथ में क्या है?" ऋतु ने पूछा।

"प्लीज़ ऋतु, अभी मेरा मूड नहीं है। तुम जाओ।" भूमि ने उसकी बात काटते हुए कहा।

"अरे मूड नहीं है तो बन जाएगा।" ऐसा कहकर ऋतु ने उसे शहर में होनेवाले क्रिकेट मैच के दो पास दिखाए। खेल-कूद की शौकीन भूमि खुश हो गई।

दूसरे दिन भूमि और ऋतु, ऋतु के डैडी के साथ स्टेडियम में मैच देखने गई। दोनों टीम भी पेविलियन में आ रही थीं। जैसे सभी दोस्त हों, इस तरह दोनों टीम के प्लेयर्स एक दूसरे के साथ बातें करते हुए चल रहे थे। खेल शुरू होने से पहले दोनों टीम के प्लेयर्स ने एक दूसरे को "बेस्ट ऑफ लक" विश किया। यह देखकर भूमि को आश्चर्य हुआ।

दोनों टीम यही सोचकर पूरे जोश के साथ खेल रही थीं कि, "जीतना ही है"। अंतिम पाँच ओवर बाकी थे। जो टीम जीत रही थी उसके प्लेयर्स खुश थे। लेकिन जो टीम हार रही थी उसके प्लेयर्स बिल्कुल भी हताश नहीं थे, न ही किसी से चिढ़ रहे थे। अंतिम ओवर में जब जीतनेवाली टीम के बेट्समेन ने सेन्चुरी बनाई तब बॉलर ने अपनी केप उतारकर बेट्समेन को बधाई दी। यह दृश्य देखकर भूमि को बहुत आश्चर्य हुआ। आश्चर्य के साथ वह देखती ही रह गई।

ऋतु बोली, "सचमुच इसे स्पोर्ट्स-मेन स्पिरिट कहते हैं।"

"हाँ बेटा, इसे ही स्पोर्ट्स-मेन स्पिरिट और हेल्दी कॉम्पीटिशन कहते हैं। जिसमें सामनेवाले से ईर्ष्या नहीं होती, बल्कि सामनेवाले के गुणों को हृदय से स्वीकार करते हैं।" ऋतु के डैडी उसकी बात का समर्थन करते हुए बोले।

गेम के अंत में हारी हुई टीम के हर एक प्लेयर ने जीती हुई टीम के हर एक प्लेयर को बधाई दी। आज पहली बार भूमि ने हेल्दी कॉम्पीटिशन का प्रत्यक्ष उदाहरण देखा। स्टेडियम से बाहर निकलते हुए ऋतु के डैडी ने कहा, "आज के गेम को मैं परफेक्ट हेल्दी कॉम्पीटिशन कहूँगा।"

दूसरे दिन भूमि अपने बिल्डिंग के फ्रेन्ड विशाल के साथ बैडमिन्टन खेलने नीचे गई। दोनों पोइन्ट टू पोइन्ट खेल रहे थे। जैसे ही भूमि ने शटल कॉक लेकर खेलने के लिए हाथ ऊँचा किया, तभी विशाल ने उसे रोका, "एक मिनिट भूमि" कहकर उसे "ऑल द

बेस्ट।" विश किया। भूमि को आश्चर्य हुआ। सचमुच तो वह विशाल को हराने के मूड में थी। विशाल को गुड लक विश करते हुए देखकर उसे कल का मैच याद आ गया। उसने स्माइल के साथ विशाल को गुड लक कहा। विश करते ही उसे ऐसा अनुभव हुआ कि विशाल जीते या मैं जीतूँ कोई दिक्कत नहीं। यह हार जीत कोई अंतिम थोड़े ही है?

खेलना शुरू किया। दोनों बहुत उत्साह से खेल रहे थे। फिर भी भूमि का ध्यान खेलने के साथ-साथ विशाल की तरफ अधिक था। खेल कभी भूमि की तरफ जाता तो कभी विशाल की तरफ। हर बार भूमि देखती कि विशाल के उत्साह में कुछ फर्क नहीं पड़ रहा था। अंत में भूमि के पोइन्टस बढ़ गए। उसके हर शॉट के लिए विशाल उसे "गुड शॉट" कहकर नवाज़ता। अंत में भूमि जीत गई। विशाल ने खुशी-खुशी उसे बधाई दी। उसने विशाल से पूछा, "तुम हारने के बाद भी इतने खुश कैसे रह सकते हो?" विशाल ने कहा, "मुझे ऐसा तो रहता है कि जीतना है लेकिन तुम नहीं जीतो, ऐसा नहीं रहता" फिर दोनों चले गए।

भूमि घर गई। खाना खाते-खाते भी उसे विशाल और कल का मैच याद आ रहा था। हारने के बाद भी विशाल के चेहरे पर कितनी मुक्तता थी। उसे अपनी हालत याद आ गई। अश्मी उससे अच्छा खेली और सभी उसे बधाई देने लगे तब वह कितनी नर्वस हो गई थी। यह सब याद आते ही उसे अपनी संकुचितता पर शर्म आने लगी। उसे हेल्दी कॉम्पीटिशन का मतलब और महत्व भी समझ में आया। उसने मन ही मन तय किया कि आज से मैं कॉम्पीटिशन करूँगी किन्तु हेल्दी। क्योंकि,

- हेल्दी कॉम्पीटिशन में दोनों ही टीम इस तरह खेलती हैं कि "जीतना ही है"।
- फिर भी हारनेवाले और जीतनेवाले दोनों को आनंद रहता है।
- हारनेवाला, जीतनेवाले के गुणों को दिल से स्वीकार करे।
- एक दूसरे के साथ ईर्ष्या न करे।
- सामनेवाले से सीखने के साथ ही सिखाने की तैयारी हो।

भूमि को आज समझ में आया कि कॉम्पीटिशन गलत नहीं है। लेकिन वह कॉम्पीटिशन हेल्दी होना चाहिए। उसमें ईर्ष्या का ज़हर नहीं घुलना चाहिए तब फिर बहुत प्रगति होगी।

यह तो ही

कोई अच्छा कर रहा हो तो उसे एप्रीशिएट करना चाहिए, "बहुत अच्छा किया," इससे आप आगे बढ़ोगे।

जो मिला है, उसकी खुशी नहीं मनाते और बेकार में स्पर्धा का दु:ख भुगतते हैं। मुझे जो मिला है, वह मेरे पुण्य से मिला है। सामनेवाले को ज्यादा मिला है तो उसे वह उसके पुण्य से मिला है।

नई बात!

स्पर्धा का दु:ख तो ऐसा है जैसे कि बहुत अच्छे बासमती चावल बनाकर उनमें कंकड़ डालकर खाना। स्पर्धा शुरू होते ही बस दु:ख, दु:ख और दु:ख ही रहता है।

औरों को सिखाने से आपका ज्ञान दस गुना बढ़ जाता है। उसे एक आएगा तो आपको दस गुना आएगा। अर्थात् आपका ज्ञान ज्यादा प्रकट होगा। जैसे कि : आपका मित्र आपसे पूछने आए, "मुझे यह सवाल सिखाओगे?" तो आपको दिल से सिखाना चाहिए। ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि यदि मैं इसे नहीं सिखाऊँगा तो इसके कम मार्क्स आएँगे, इससे मेरे मार्क्स बढ़ जाएँगे। ऐसा कपट नहीं करना चाहिए।

एक अनोखी रेस

चलो बच्चों, रनिंग ट्रेक पर रेस के लिए तैयार हो जाओ। इस रेस में जो जीतेगा उसे सन-ग्लासेस इनाम में मिलेंगे।
ओह नो। फिर रेस???...
लेकिन जैमिन तो रेस का नाम सुनकर कूद पड़ा...
सन-ग्लासेस तो किसे अच्छे नहीं लगते? लेकिन मैं कहाँ जीतनेवाला हूँ।
अरुण सर ने व्हिसल बजाई और सभी बच्चे दौड़ने लगे...

आलाप जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, उतनी तेज़ी से वह दौड़ रहा था... लेकिन थोड़े ही समय में उसे सभी बच्चों की पीठ दिखने लगी और अपनी हार दिखने लगी।
हे..हे..हे.. मैं जीत गया।
और अरुण सर से अपना प्राइज़ लेने गया।
अ..हं.. इतनी जल्दी नहीं। यह तो पहला राउन्ड था। अभी एक राउन्ड बाकी है।
जैमीन धीरे से बड़बड़ाया...
कोई हर्ज नहीं, यदि पहला राउन्ड जीत गया, तो दूसरा राउन्ड भी जीत जाऊँगा...
फिर बच्चे लाइन में खड़े हो गए। लेकिन व्हिसल बजाने के बजाय अरुण सर ने एक छोटा सा इलेक्ट्रोनिक साधन ऑन किया।
इस कम्प्यूटराइज़ड स्पॉट-वॉच से, तुम सभी को पहले राउन्ड में फिनिश लाइन तक पहुँचने में जितना समय लगा था वह मैंने रिकॉर्ड किया है।

सभी बच्चों के कान सतर्क हो गए।
... और अब जो भी अपने दूसरे राउन्ड में पहले राउन्ड से कम समय में पहुँचेगा वही विजेता बनेगा।
क्या?? मतलब जो पहला नंबर आए वह विजेता नहीं?
नहीं, यह अलग तरह की रेस है। तुम लोग एक दूसरे के साथ नहीं, बल्कि खुद के साथ ही कॉम्पीटिशन कर रहे हो। अब चलो, सभी तैयार हो?
अरुण सर ने व्हिसल बजाई...
आज पहली बार मुझे रेस में मज़ा आ रहा है। आज पहली बार, कौन मेरे आगे या पीछे है, इस पर मेरा ध्यान ही नहीं है।
मेरे लक्ष्य में तो यही है कि मैं पहले से अधिक अच्छा कर रहा हूँ या नहीं।
रेस पूरी हुई। सभी बच्चे आशा भरी नज़र लेकर अरुण सर के आस पास खड़े हो गए।

पता है, तुम सभी ने इस राउन्ड में, पहले राउन्ड से अच्छा पर्फार्म किया है। इसका मतलब तुम सभी विजेता हो।
ऐसा कहकर अरुण सर ने सभी को एक-एक सन-ग्लास दिया। सन-ग्लासेस पहनकर आलाप को जैसे एक नई दृष्टि मिल गई...
कि.... कॉम्पीटिशन का मतलब औरों से आगे निकलना नहीं, लेकिन अपने ही पिछले पर्फार्मन्स से और ज्यादा अच्छा करना भी है...
उस दिन से आलाप कभी भी कॉम्पीटिशन से घबराया या चीढ़ा नहीं। और हमेशा अपना पर्फोमन्स किस तरह सुधरे उसी पर ध्यान देता।

अपने आपको परखकर देखो !

मित्रों, इस अंक में हमने हेल्दी कॉम्पीटिशन के बारे में समझा है। तो चलो, अब इस समझ का उपयोग करें। नीचे दिए गए हर एक घटना की स्टडी करें।

१. जापानीज़ कराटे क्लब के कॉम्पीटिशन में भाग लेने के लिए गौतम और उसके मित्र विशाल को सिलेक्ट किया गया। गौतम को दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से बधाई दी लेकिन फर्स्ट प्राइज़ विशाल को मिला। यह देखकर गौतम बहुत निराश और परेशान हो गया।

२. फुटबॉल के खेल में तपस को बहुत मज़ा आ रहा था। लेकिन अधूरा खेल पूरा होने तक तो तपस का पूरा मज़ा चला गया, और उसे ईर्ष्या का दुःख सताने लगा। इसका कारण था कि आधा गेम पूरा होने तक उससे एक भी गोल नहीं हो पाया जबकि उसके मित्र कार्तिक ने तीन गोल कर दिए थे।

३. स्मित को ऐसा लग रहा था कि वह लता टीचर का फेवरेट स्टूडेन्ट है। लेकिन जब से मीत उसकी क्लास में आया तब से उसे लगने लगा कि टीचर मीत से बहुत खुश रहती हैं। ऐसा सोचने से स्मित को मीत के प्रति द्वेष और ईर्ष्या होने लगी।

४. स्नेहा को लगता कि मम्मी-पापा उसके बजाय उसकी छोटी बहन नेहा को ज्यादा प्यार करते हैं। नेहा हमेशा पढ़ाई में और दूसरी प्रवृत्तियों में स्नेहा से आगे रहती थी।

जिस दिन नेहा को पेन्टिंग कॉम्पीटिशन में प्राइज़ मिला, उस दिन स्नेहा का नेहा के प्रति बहुत भाव बिगड़ा। "किस तरह नेहा को नीचा दिखाऊँ?" इन विचारों में वह खो गई। और अंत में उसे नेहा की पेन्टिंग फाड़ देने का मन हुआ।

५. जब से नया लड़का अपूर्व, हर्ष की क्लास में आया था, तभी से हर्ष का वर्तन बहुत ही बिगड़ गया था। अपूर्व पढ़ाई में और स्पोर्ट्र्स में बहुत आगे था और कुछ ही दिनों में उसकी अपने क्लास के सभी विद्यार्थियों के साथ मित्रता भी हो गई।

हर्ष को डर लगने लगा था कि अपूर्व उसके बेस्ट फ्रेन्ड को उससे छीन लेगा। इस तरह असुरक्षा महसूस होने से उसने सभी से बातें करना कम कर दिया।

ठीक से स्टडी किया न? अब ढूँढ निकालो नीचे दी गई कौन सी समझ से, ऊपर की घटनाओं को हेल्दी कॉम्पीटिशन में बदल सकते हैं। मतलब, ढूंढ निकालो कि कौन सी समझ किस व्यक्ति पर लागू होती है। हर एक समझ के सामने योग्य व्यक्ति का नाम लिखो। एक से अधिक नाम भी लिख सकते हैं।

समझ नं :

१. किसी का खराब करने का भाव हुआ, तो अंत में हमारा ही खराब होता है। इसलिए मैं ऐसी ही भावना करूँगा कि "उसका अच्छा हो" और मैं अपनी तरह से डबल प्रयत्न करूँगा।

२. मैं उसके अच्छे गुणों को हृदय से स्वीकार करूँगा। उन गुणों को एप्रीशिएट करूँगा और सब के साथ मिलजुलकर रहूँगा।

३. मुझे जो मिला वह मेरे पुण्य का मिला और उसे जो मिला वह उसके पुण्य का मिला है। उसके लिए मैं खुश हूँ और उसे ज्यादा मिले ऐसी भावना करूँगा।

४. मुझे उसके साथ कॉम्पीटिशन करने की क्या ज़रूरत है? मेरी शक्ति के अनुसार मुझे परिणाम मिला और उसकी शक्ति के अनुसार उसे परिणाम मिला। मैं उसके लिए भी खुश हूँ।

५. "मुझे अच्छा परफोर्म करना ही है।" ऐसा सोचकर मैं खेलूँगा। लेकिन किसी के साथ कम्पेयर करके, मैं खेल का मज़ा क्यों बिगाड़ूँ? उसके साथ कम्पेयर करने के बजाय अनुमोदन करूँगा कि, "बहुत अच्छा किया।"

जवाब :

समझ नं :

१. स्नेहा २. हर्ष ३. स्मित ४. गौतम ५. तपस

सत्य घटना

दिसम्बर २, २०१० के दिन, स्पेनिश क्रॉस कन्ट्री के समय, स्पोर्ट्स की दुनिया में स्पोर्टस मेन का एक अनोखा उदाहरण देखने को मिला।

रेस में, स्पेन के ईवान फेर्नान्डीज़, दूसरे नंबर पर दौड़ रहे थे और केन्या के ईवान मुताई पहले नंबर पर थे।

ऐसा सोचकर कि फिनिश लाइन पार कर ली है, ईवान मुताई गलती से फिनिश लाइन से १० मीटर पहले ही रुक गए। लेकिन फेर्नान्डीज़ ने मुताई की गलती का फायदा नहीं उठाया। जब वे मुताई के नज़दीक पहुँचे तब मुताई से आगे दौड़ने के बजाय, उन्होंने पीछे से ही, मुताई से, अभी और आगे दौड़ने का इशारा किया। और पहले मुताई को फिनिश लाइन क्रोस करने दी।

जब फेर्नान्डीज़ से पूछा गया कि उन्होंने यह क्यों किया, तब फेर्नान्डीज़ ने जवाब दिया, "सचमुच मुताई ही विजेता थे। यदि मुताई गलती से रुक नहीं गए होते तो मैं खुद के और उनके बीच के अंतर को पूरा नहीं कर पाया होता। और मुझे उनकी गलतफहमी का फायदा उठाकर नहीं जीतना था।"

लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से फेर्नान्डीज़ को बधाई दी।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

राजगृही के एक व्यापारी ऋषभदत्त की पत्नी धारिणी ने एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम जंबु रखा गया। जंबु बहुत ही गुणवान था और सभी का बहुत लाड़ला भी था।

जंबु जब युवा हुआ, तब उसके गुण और रूप से प्रसन्न होकर, बहुत से माँ-बाप अपनी बेटी की शादी जंबु से करवाने के लिए उत्सुक थे। जंबु के माता-पिता ने उसके लिए आठ कन्याएँ पसंद कीं। धूम धाम से उन कन्याओं के साथ जंबु की सगाई कर दी।

एक बार सुधर्मा स्वामी राजगृही में देशना देने के लिए पधारे। जंबु भी उनकी देशना सुनने गया। उनका उपदेश सुनकर जंबु को सांसारिक जीवन और परिवार का त्याग करने की इच्छा हुई। जंबु के माता-पिता अपने युवा बेटे की संसार त्याग की भावना से सहमत नहीं हुए। आठ कन्याओं के माता-पिता भी जंबु की बात सुनकर चिंता में पड़ गए कि अब विवाहित कन्याओं का हाथ कौन पकड़ेगा?

सभी ने जंबु को साधु नहीं बनने के लिए बहुत समझाया। सुख-सुविधाओं के साथ जीने की सलाह दी, माता-पिता और पत्नियों के प्रति फर्ज की याद दिलाई। जंबु ने बहुत ही शांति से सभी की बातें सुनी लेकिन वे अपने निर्णय पर तटस्थ रहे।

माता-पिता को लगा, कि यदि एक बार जंबु की शादी करा देंगे, तो वह मोज-मज़े में पड़ जाएगा और साधु बनने का विचार छोड़ देगा। ऐसा सोचकर उन्होंने जंबु को शादी करने का आदेश दिया।

जंबु ने कहा, "मैं शादी करूँगा लेकिन उसके दूसरे ही दिन इस संसार का त्याग कर दूँगा।" और इस शर्त के साथ जंबु ने शादी करने के लिए "हाँ" कहा।

बहुत ही धूम-धाम से शादी हुई। शहर के जाने माने और मशहूर मेहमानों को निमंत्रण दिया गया। नवपरिणित दम्पति को बहुत ही कीमती भेंट सौगातें दी गई।

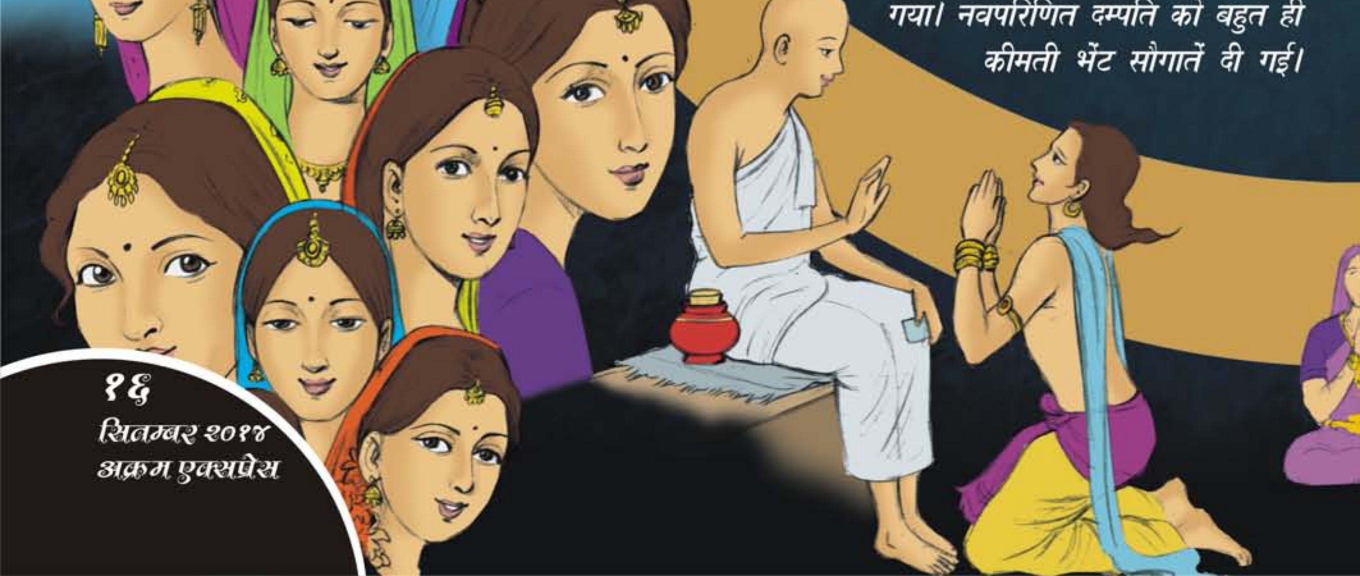

राजगृही नगरी ने कभी भी इतना भव्य विवाह समारोह नहीं देखा था। इतनी सुंदर कन्याओं के साथ शादी करने के लिए सभी जंबु को बधाईयाँ दे रहे थे।

लेकिन जंबु पर इस वैभव का कुछ असर नहीं पड़ा। दूसरे दिन संसार छोड़कर साधु बनने के अपने निर्णय पर वे तटस्थ थे। उन्हें अपनी पत्नियों को भी साधु जीवन जीने के लिए तैयार करना था।

शादी की रात को वे अपनी पत्नियों से धर्म से सम्बधित बातें कर रहे थे। तभी प्रभव नामक महाचोर ने चोरी के इरादे से अपने ५०० साथियों के साथ जंबु के महल में प्रवेश किया। वह राजगृही के पास के विंध्य राज्य का राजकुमार था। पिता के साथ मतभेद होने के कारण उसने राज्य छोड़ दिया और चोर बन गया। वह बलवान और कुशल चोर था। किसी को भी बेहोश करके किसी भी तरह का ताला तोड़ सकता था। जंबु के महल में आकर उसे शादी में मिली हुई अपार संपत्ति की चोरी करनी थी।

जब वह महल में पहुँचा तब उसने जंबु को अपनी पत्नियों के साथ त्याग की चर्चा करते हुए सुना। वह भी दरवाज़े के नज़दीक आकर जंबु की बात सुनने लगा। जंबु के शब्द इतने प्रभावशाली थे कि वह वहाँ से हिल भी न सका और वहीं खड़ा रह गया।

प्रभव को लगा, "मैं संपत्ति की चोरी करने के लिए कठीन मेहनत कर रहा हूँ जबकि ये तो मिली हुई संपत्ति का त्याग करने की बातें कर रहे हैं।"

इतने में प्रभव के साथी महल में से चीज़ों की चोरी करके प्रभव के पास आए। लेकिन जंबु की बातें सुनकर संपत्ति की लालसा छूट गई। वह चोरी का जीवन छोड़ने के लिए तैयार हो गया। उसने मित्रों को अपने विचार बताए और मित्रों को जो ठीक लगे वैसा करने की छूट दी, उसके मित्र उसे छोड़कर जाने के लिए तैयार नहीं हुए।

इस तरह जंबु ने अपनी पत्नियों के साथ धार्मिक चर्चा पूरी की। पत्नियाँ भी संसार छोड़कर साध्वी बनने के लिए तैयार हो गई।

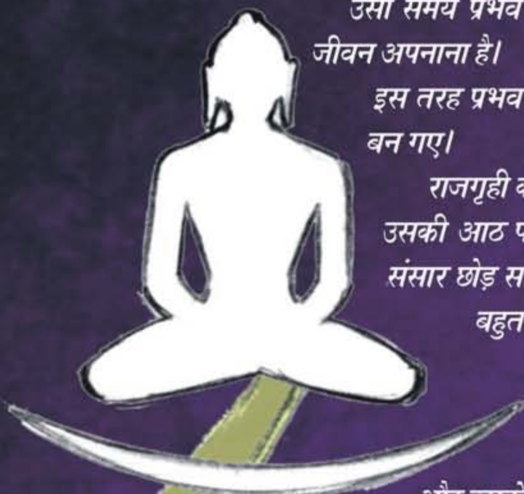

उसी समय प्रभव ने कमरे में आकर अपनी हकीकत बताते हुए कहा कि उसे भी साधु जीवन अपनाना है।

इस तरह प्रभव और उसके ५०० मित्र भी जंबु के साथ निकल पड़े और जंबु के शिष्य बन गए।

राजगृही के लोग जब सुबह जागे तब उन्हें चौंकानेवाले समाचार मिले कि जंबु और उसकी आठ पत्नियाँ, प्रसिद्ध सेंधमार चोर प्रभव और उसके ५०० साथी उसी दिन संसार छोड़ साधु बननेवाले हैं। जंबु के माता-पिता को अपना इरादा पूरा नहीं होने पर बहुत ही निराशा हुई। अंत में वे और आठ पत्नियों के माता-पिता जंबु के संदेश का महत्त्व समझे और जंबु के साथ साधु जीवन अपना लिया। सभी दीक्षा ग्रहण करने जा रहे थे तभी रास्ते में सुधर्मा स्वामी मिले।

सभी सुधर्मा स्वामी को नमस्कार करके उनके शिष्य बन गए। प्रभव और उसके ५०० साथी जंबु के शिष्य बन गए।

जंबुस्वामी ने बाद में महावीर के सभी उपदेशों का अध्ययन किया। उन्होंने जैन धर्म के शास्त्रों की रचना की, जिनका अधिकांश भाग सुधर्मा स्वामी और जंबु स्वामी के बीच के संवाद थे।

सुधर्मा स्वामी को केवलज्ञान होने के बाद जंबुस्वामी धार्मिक संप्रदाय के अधिपति बने। ४४ साल तक इस पद को निभाने के बाद जंबु स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। वे वर्तमान आरे के अंतिम केवली थे।

८० साल की उम्र में उनका निर्वाण हुआ।

मीठी यादें

नीरू माँ के साथ की एक बात है। उनके रूम में जहाँ सीमंधर स्वामी भगवान की मूर्ति विराजमान है, उनके आस पास कांच के छोटे-छोटे हाथी रखे हुए थे। एक बहन रोज़ की तरह भगवान को कपड़े से पोंछ रही थी। उसके बाद हाथी पोंछते समय एक हाथी उनके हाथ से गिर गया और उसकी सूंड़ टूट गई। उन बहन से पहले भी कई बार कांच की चीज़ें टूट गई थीं इसलिए नीरू माँ अक्सर उन्हें "कांच तोड़" कहते थे।

एक बार फिर कांच की चीज़ टूटने से उन बहन को टेन्शन हो गया कि अब क्या करूँ? नीरू माँ से क्या कहूँगी? वे डर गई। उन्होंने फेवीस्टिक से सूंड़ जोड़ने का प्रयत्न किया, औरों से भी करवाया लेकिन सूंड़ नहीं जुड़ी। टूटा हुआ हाथी भगवान के पास ही रखा हुआ था।

बहन ने तय किया कि नीरू माँ को बताना है, लेकिन डर लग रहा था। दो-तीन बार कहने की कोशिश की लेकिन हिम्मत नहीं हुई। ऐसा करते-करते शाम हो गई, रात भी हो गई।

रात के खाने के बाद नीरू माँ आराम से बैठे थे, तभी वे बहन नीरू माँ के पास गई और कहा, "नीरू माँ, आज मुझसे कांच का हाथी टूट गया है।"

यह सुनकर नीरू माँ ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगीं। उन्होंने प्रेम से उन बहन को बताया कि हाथी कहाँ से लाए थे और कितना संभालकर लाए थे। डाँटने की जगह नीरू माँ को बातें करते देखकर उनका डर भाग गया और वे फिर नीरू माँ की सेवा में लग गई।

थोड़ी देर बाद नीरू माँ ने उन बहन को प्रसादी की तरह टॉवेल देते हुए कहा, "तुमने सच बताया इसलिए तुम्हारे लिए यह मेरी प्रसादी है।"

बहन तो बहुत खुश हो गई। नीरू माँ से टॉवेल लेकर जा रही थी तभी नीरू माँ हँसते-हँसते इशारा करते हुए बोलीं, "देखना, फिर प्रसादी मिलेगी ऐसा सोचकर तोड़ फोड़ मत करना।"

नीरू माँ और बहन दोनों हँसने लगे।

Akram Express

September 2014
Year : 2, Issue : 6
Conti. Issue No.: 18

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

पूज्यश्री की निश्रामें सीमधर सीटी में जन्माष्टमी का त्यौहार मनाया गया

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.